Rohtas Mahila College, SASARAM
Study Material : SANSKRIT (B.A. Part III)
Dr. Savitri Singh
Associate Professor (Sanskrit)
R.M.C. SASARAM

Paper : VII

काव्यदीपिका अथवा मम्मट के अनुसार शब्दशक्तियों के स्वरूप का वर्णन

काव्य लक्षण का निरूपण करते समय सबसे प्रमुख तथ्य शब्द और अर्थ सामने आता है। आचार्य दण्डी ने भी अलौकिक हृदयावजाही अर्थ से अलंकृत पदों के समूह को काव्य कहा है। आचार्य मम्मट ने भी ऐसे शब्दार्थ-युगल को काव्य कहा है जो दोषरहित गुणसहित तथा प्रायः अलंकृत भी होते हों।

तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलङ्कृति पुनः क्वापि।

आचार्य मम्मट के काव्य लक्षण में भी शब्द तथा अर्थ विशेष्य हैं, अन्य पद उनके विशेषण हैं; अतः शब्द शक्तियों के बारे में जानना महत्वपूर्ण है।

पद अकेले रहने पर भी अर्थ उपस्थित करते हैं, किन्तु अनेक अर्थों में परस्पर कोई सम्बन्ध नहीं होता। जैसे- गौ, ब्राह्मण, हाथी, घोड़ा इत्यादि।

किन्तु वाक्य में (पदों का समूह) यह बात नहीं होती। वाक्य अपने अन्दर आये हुए पदों के अर्थों को मिलाकर समुदाय रूप से एक अखण्ड अर्थ को बताता है।

अन्वितैकार्थबोधे तु वाक्यं पदसमुच्चयः।
सुप्तिङन्तं पदं प्राह पाणिनिर्मुनिसत्तमः॥

(काव्यदीपिका, द्वि. शिखा)

आकांक्षा, योग्यता तथा आसक्ति द्वारा परस्पर अन्वित पदों में जहाँ अवबोध होता है उस पद समुदाय को वाक्य कहते हैं। मुनित्रेक महर्षि पाणिनि ने अपनी अष्टाध्यायी में 'सुप्तिङन्तं पदम्' इस सूत्र के द्वारा यह बात कही है। जैसे रामः, भवति आदि।

काव्य विवेचना के क्रम में शब्दशक्तियों का उल्लेख करते हुए आचार्य मम्मट कहते हैं

स्याद्वाचको लाक्षणिकः शब्दोऽत्र व्यञ्जकस्त्रिधा।
वाच्यादयस्तदर्थाः स्युर्मम्मटेन यथोदिताः ॥ २॥

आचार्य मम्मट ने अपने काव्यप्रकाश में तीन प्रकार के शब्द बताये हैं - वाचक, लाक्षणिक और व्यञ्जक। इस प्रकार काव्यभूमि में तीन प्रकार के शब्द वाचक, लक्षक और व्यञ्जक और उनके अर्थ होते हैं - वाच्य, लक्ष्य तथा व्यंग्य।

1. अभिधा
2. लक्षणा
3. व्यञ्जना

अभिधा - किसी भी शब्द का साक्षात संकेतित अर्थ वाच्य कहलाता है। यह अर्थ मुख्यार्थ माना जाता है। शरीर के सभी अवयवों में प्रथम एवं प्रधान होने से मुख जिस प्रकार सबसे पहले दिखलाई देता है, उसी प्रकार तीनों अर्थों में वाच्यार्थ सबसे पहले उपस्थित होता है। उस वाच्यार्थ या मुख्यार्थ को समझानेवाला जो शब्द का व्यापार है, उसे अभिधा कहते हैं।

लक्षण : साक्षात् संकेतितं योऽर्थमभिधत्ते स वाचकः ॥ ३॥

(मम्मट)

क्रमशः →